हिंदी प्रश्न पत्र– 2

01. निम्न में से किस शब्द की वर्तनी शुद्ध है ?
    1. रचयता
    2. रचइता
    3. रचियता
    4. रचयिता
02. 'कवि' का सही स्त्रीलिंग शब्द क्या है ?
    1. कवित्री
    2. कवियत्री
    3. कवियित्री
    4. कवयित्री
03. 'प्रत्येक' का संधि विच्छेद क्या है?
    1. प्र + त्येक
    2. प्रत + एक
    3. प्रति + एक
    4. प्रत्य + एक
04. 'केतु' किसका पर्यायवाची शब्द है?
    1. झंडा
    2. आचार्य
    3. किरण
    4. दिशा
05. 'अनुपस्थित' में किस उपसर्ग का प्रयोग हुआ है?
    1. अनुप्
    2. अनु
    3. अ
    4. अन्
06. 'सूर्योदय हुआ और कुहासा जाता रहा।' यह कैसा वाक्य है?
    1. सरल वाक्य
    2. मिश्र वाक्य
    3. संयुक्त वाक्य
    4. उपवाक्य
07. 'लल्लो–चप्पो करना' के अर्थ को व्यक्त करने वाला मुहावरा है–
    1. डींग मारना
    2. खुशामद करना
    3. शिकायत करना
    4. बातें बनाना

निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर प्रश्न संख्या 8 से 12 तक के उतर दीजिए–

संसार में दो अचूक शक्तियां हैं– वाणी और कर्म। कुछ लोग वचन से संसार को राह दिखाते हैं कुछ लोग कर्म से, शब्द और आचार दोनों ही महान शक्तियां हैं, शब्द की महिमा अपार है, विश्व में साहित्य, कला, विज्ञान, शास्त्र सब शब्द शक्ति के प्रतीक प्रमाण हैं, पर कोरे शब्द व्यर्थ होते हैं, जिनका आचरण न हो, कर्म के बिना वचन, वयवहार के बिना सिद्धांत की कोई सार्थकता नहीं है, निःसंदेह शब्द शक्ति महान है, पर चिरस्थायी और सनातनी शक्ति तो व्यवहार है, महात्मा गॉधी ने इन दोनों की कठिन और अद्‌भुत साधना की थी महात्मा जी का सम्पूर्ण जीवन उन्हीं दोनों से युक्त था। वे वाणी और वयवहार में एक थे, जो कहते थे वही करते थे, यही उनकी महानता का रहस्य है। कस्तूरबा ने शब्द की अपेक्षा कृति की उपासना की थी, क्योंकि कृति का उत्तम व चिरस्थायी प्रभाव होता है। 'बा' ने कौरी शाब्दिक, सैद्धांतिक शब्दावली नहीं सीखी थी, वे तो कर्म की उपासिका थीं। उनका विश्वास शब्दों की अपेक्षा कर्मों में था वे जो कहा करती थी उसे पूरा करती थी। वे रचनात्मक कार्यों को प्रधानता देती थी इसी के बल पर उन्होने अपने जीवन में सार्थकता व सफलता प्राप्त की थी।

08. प्रायः सज्जन व्यक्ति संसार को राह दिखाते है–
    1. अपनी कार्यकुशलता से
    2. अपने कर्म एवं वाणी से
    3. अपनी सेवा भावना से
    4. प्रत्येक व्यक्ति की मदद की भावना से।
09. जगत में साहित्य, कला व विज्ञान शास्त्र–
    1. शब्द याक्ति के रूप में हैं।
    2. शब्द शक्ति का ज्ञान कराते हैं।
    3. शब्द शक्ति का प्रमाणिक रूप है।
    4. शब्द शक्ति से अलग नहीं हैं।
10. शब्द शक्ति के महान होते हुए भी–
    1. व्यवहार भी सनातनी शक्ति के रूप में है
    2. व्यवहार भी शक्तिशाली है।
    3. व्यवहार भी एक शक्ति के रूप में हैं
    4. शब्द शक्ति और व्यवहार दोनों महान है।
11. गांधी जी की महानता यह थी कि वे–
    1. सदैव सत्य का सहारा लेते थे।
    2. सदैव हिंसा से दूर रहते थे।
    3. सदैव गरीबों की मदद करते थे।
    4. जो कहते थे वही करते थे।
12. उपर्युक्त अवतरण का सर्वाधिक उपयक्त शीर्षक होगा–
    1. कस्तूरबा और गांधी जी।
    2. महात्मा गांधी।
    3. निष्ठपूर्ति कस्तूरबा।
    4. वाणी और कर्म।
13. 'यह, वह' किस प्रकार का सर्वनाम है?
    1. निश्चयवााचक
    2. अनिश्चवाचक
    3. संबंधवाचक
    4. प्रश्नवाचक
14. 'रुकावट' कौन सी संज्ञा है?
    1. जातिवाचक
    2. व्यक्तिवाचक
    3. भाववाचक
    4. समूहवाचक
15. 'कोशकार' में समास है–
    1. तत्पुरुष
    2. अव्ययीभाव

www.rsnotes.in

3. कर्मधारय
4. द्विगु

16. 'अष्टाध्यायी' में समास है–
1. द्विगु
2. द्वंद्व
3. बहुव्रीहि
4. कर्मधारय

17. तन्मय' का सही संधि–विच्छेद है–
1. तन्+मय
2. तम्+अय
3. तत्+मय
4. तन्+अमय

18. स्वर संधि के कितने भेद हैं?
1. 3
2. 4
3. 5
4. 7

19. 'घ' क उच्चारण स्थान है–
1. कंठ
2. तालु
3. दंत्य
4. मूर्द्धा

20. निम्न में से कौन–सा घोष वर्ण है ?
1. ख
2. च
3. म
4. ठ

21. जो पहले कभी न हुआ हो–
1. अद्भुत
2. अभूतपूर्व
3. अपूर्व
4. अनुपम

22. 'आलोक' का विलोम शब्द है–
1. अद्भुत
2. अज्ञात
3. अंधकार
4. रात्री

23. 'जनार्दन' किसका पर्यायवाची है:
1. कृष्ण
2. विष्णु
3. राम
4. ब्रह्मा

24. 'ं' चिह्न क्या है?
1. हंसपद
2. लोप चिह्न
3. लाघव चिह्न
4. अल्प विराम

25. 'निर्वासित' में प्रत्यय है–
1. इक
2. सित
3. नि
4. इत

निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर प्र.सं. 26 से 30 तक उत्तर दीजिए–

कबीर ने समाज में रहकर समाज का बड़े समीप से निरीक्षण किया। समाज में फैले बाह्याडम्बर, भेदभाव, साम्प्रदायिकता आदि का उन्होंने पुष्ट प्रमाण लेकर ऐसा दृढ़ विरोध किया कि किसी की हिम्मत नहीं हुई जो उनके अकाट्य तर्कों को काट सके। कबीर का व्यक्तित्व इतना ऊचॉ था कि उनके सामने टिक सकने की हिम्मत किसी में नही थी। इस प्रकार उन्होंने समाज तथा धर्म की बुराइयों को निकाल–निकाल कर सबके सामने रखा, ऊँचा नाम रखकर संसार को ठगने वालों के नकली चेहरों को सबको दिखाया और दीन–दलितों को ऊपर उठने का उपदेश देकर अपने व्यक्तित्व को सुधारकर सबके सामने एक महान् आदर्श प्रस्तुत कर सिद्धांतों का निरूपण किया। कर्म, सेवा, अहिंसा तथा निर्गुण मार्ग का प्रसार किया। कर्मकाण्ड तथा मूर्तिपूजा का विरोध किया। अपनी साखियों, रमैनियों तथा सब्दों को बोल चाल की भाषा में रचकर सबके सामने एक विशाल ज्ञानमार्ग खोला। इस प्रकार कबीर ने समन्वयवादी दृष्टिकोण अपनाया और कथनी–करनी की एकता पर बल दिया। वे महान् युगद्रष्टा, समाज सुधारक तथा महान् कवि थे। उन्होने हिन्दू, मुस्लिम के बीच समन्वय की धारा प्रवाहित कर दोनों को ही शीतलता प्रदान की।

26. कबीर के सामने कोई नहीं टिक पाता था क्योंकि कबीर–
1. उच्च शिक्षा प्राप्त विद्वान और बहुश्रुत थे।
2. शास्त्रार्थ में अत्यन्त प्रवीण थे।
3. का व्यक्तित्व बहुत ऊंचा था।
4. का सामाजिक निरीक्षण तथ्यात्मक था।

27. कबीर ने विरोध किया–
1. आचरणहीन ढ़ोंगियों का।
2. शोषकों और दलितों का
3. साम्प्रदायिक सापंजस्य का।
4. शोषितों और पीड़ितों का।

28. सन्त कबीर ने प्रशस्त किया–
1. ज्ञान मार्ग
2. भक्ति मार्ग
3. वेद–मार्ग
4. सत्य और अहिंसा का मार्ग

29. कबीर की रचनाओं की भाषा बोल चाल की भाषा थी, क्योंकि उनके उपदेश थे–
1. असाधारण और असापान्य लोगों के लिए
2. सम्पन्न एवं समृद्ध लोउों के लिए
3. कवियों एवं लेखकों के लिए
4. सर्वसाधारण के लिए

30. कबीर के साम्प्रदायिकता विरोधी तर्क अकाट्य थे, क्योंकि–
1. कबीर ने समाज का निरीक्षण बड़े नजदीक से किया था।
2. उनके तर्क पुष्ट प्रमाणों पर आधारित थे
3. वे इनसे व्यक्तिगत लाभ उठाना चाहते थे
4. वे इनसे यशोपार्जन करना चाहते थे।

www.rsnotes.in

उतर माला

01. 4
02. 4
03. 3
04. 1
05. 4
06. 3
07. 2
08. 2
09. 1
10. 1
11. 4
12. 4
13. 1
14. 3
15. 1
16. 1
17. 3
18. 3
19. 1
20. 3
21. 2
22. 3
23. 2
24. 3
25. 4
26. 3
27. 1
28. 1
29. 4
30. 2

www.rsnotes.in

www.rsnotes.in